अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : सातवीं– जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 05 जनवरी, 2025)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(i) संयतासंयत में गुणस्थान होता है-
(क) 1 से 5 तक (ख) पहला
(ग) पाँचवाँ (घ) चौथा (ग)

(ii) नो भव्य नो अभव्य होता है-
(क) सिद्ध (ख) तेरहवाँ गुणस्थान
(ग) चौदहवाँ गुणस्थान (घ) प्रथम गुणस्थान (क)

(iii) अचरम में शामिल है-
(क) अभवी (ख) सिद्ध
(ग) मिथ्यात्वी (घ) अभवी और सिद्ध (घ)

(iv) शुक्ल पक्षी में गुणस्थान पाये जाते हैं-
(क) चौथा गुणस्थान (ख) 1 से 14 गुणस्थान
(ग) चौदहवाँ गुणस्थान (घ) पहला गुणस्थान (ख)

(v) तीन विकलेन्द्रिय के 31 बोल में से कितने बोलों में पहला, तीसरा भांगा पाया जाता है-
(क) 26 (ख) 27
(ग) 25 (घ) 29 (ख)

(vi) तिर्यंच पंचेन्द्रिय के 40 बोलों में कितने बोलों में चारों भंग पाये जाते हैं-
(क) 33 (ख) 30
(ग) 39 (घ) 38 (क)

(vii) मनुष्य के बोलों में केवलज्ञानी में कौनसा भंग पाया जाता है-
(क) पहला (ख)दूसरा
(ग) तीसरा (घ) चौथा (घ)

(viii) जीव पज्जवा का थोकड़ा पन्नवणा के कौनसे पद से लिया गया है-
(क) पाँचवाँ (ख) चौथा
(ग) तीसरा (घ) दूसरा (क)

(ix) उत्कृष्ट अवगाहना वाले नेरयिकों की स्थिति होती है-
(क)एकस्थानपतित (ख) द्विस्थानपतित
(ग) त्रिस्थानपतित (घ) चतुस्थानपतित (ख)

(x) मध्यम चक्षुदर्शन वाले में उपयोग पाये जाते हैं-
(क) 6 (ख) 3
(ग) 9 (घ) 10 (घ)

(xi) मध्यम अवगाहना वाले पृथ्वीकाय के जीवों की अवगाहना होती है-
(क) एकस्थानपतित (ख) द्विस्थानपतित
(ग) त्रिस्थानपतित (घ) चतुस्थानपतित (घ)

(xii) उत्कृष्ट अवगाहना वाले मनुष्य में उपयोग पाये जाते हैं-
(क) 6 (ख) 9
(ग) 10 (घ) 12 (क)

(xiii) जघन्य स्थिति वाले मनुष्य में उपयोग कितने हो सकते हैं
(क) तीन (ख) चार
(ग) पाँच (घ) छह (ख)

(xiv) कितने उपयोग उत्कृष्ट चारित्रवान संयमी मनुष्य में मिलते हैं-
(क) 5 (ख) 3
(ग) 6 (घ) 9 (घ)

(xv) परमाणु में स्पर्श होते हैं-
(क) 4 (ख) 8
(ग) 6 (घ) 3 (क)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1=(15)

(i) आयु का बंध 1 से 7वें गुणस्थान (तीसरे को छोड़कर) तक जीवन में 1 बार ही होता है। (हाँ)
(ii) अनुत्तर विमान के देवों में अचरम का बोल पाया जाता है। (नहीं)
(iii) जिन बोलों में 1 से 14 गुणस्थान मिलते हैं, उनमें 8 कर्मों की भजना कहना चाहिए। (हाँ)
(iv) 47 बोल की बंधी भगवती शतक 26 के प्रथम उद्देशक से ली गई है। (नहीं)
(v) कृष्ण पक्षी में प्रथम गुणस्थान पाया जाता है। (हाँ)
(vi) केवलज्ञानी में केवल एक चौथा भंग पाया जाता है। (हाँ)
(vii) मिश्र दृष्टि अवस्था में आयुष्य का बंध नहीं होता है। (हाँ)
(viii) अवेदी में आयुष्य का बंध होता है। (नहीं)
(ix) दस उपयोग के पर्याय षट्स्थानपतित होते हैं। (हाँ)
(x) जघन्य अवगाहना उत्पत्ति के द्वितीय समय में मानी जाती है। (नहीं)
(xi) तिर्यंच पंचेन्द्रिय में जघन्य अवगाहना युगलिकों की नहीं होती है। (हाँ)
(xii) युगलिकों को अवधिज्ञान हो सकता है। (नहीं)
(xiii) तिर्यंचों में उत्कृष्ट अवगाहना युगलिकों की होती है। (नहीं)
(xiv) उत्कृष्ट अवधिज्ञान प्राप्त होने पर अन्तर्मुहूर्त में केवलज्ञान की नियमा है। (हाँ)
(xv) प्रदेश तथा परमाणु दोनों ही विभाज्य है। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- 10x1=(10)

(i)	स्थिति	(क) सम्पूर्ण वस्तु	जीवन-पर्यन्त
(ii)	अवगाहना	(ख) सम्पूर्ण लोक	वर्तमान समय
(iii)	अलावे	(ग) षट्स्थानपतित	1076
(iv)	पल्योपम	(घ) असंख्यात काल	असंख्यात हजार वर्ष
(v)	स्कन्ध	(च) 39 अलावे	सम्पूर्ण वस्तु
(vi)	असंख्यात आकाश प्रदेश	(छ) जीवन-पर्यन्त	सम्पूर्ण लोक
(vii)	वर्णादि 20 बोल	(ज) 260 अलावे	षट्स्थानपतित
(viii)	उत्कृष्ट स्थिति	(झ) वर्तमान समय	असंख्यात काल
(ix)	भाव के	(य) 1076	260 अलाव
(x)	स्थिति के	(र) असंख्यात हजार वर्ष	39 अलावे

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1=(15)

(i)	मेरा बंध पहले से तेरहवें गुणस्थान तक निरन्तर होता है।	वेदनीय
(ii)	हम अगले भव में मोक्षगमी नहीं हो सकते हैं।	विकलेन्द्रिय
(iii)	मुझमें 47 बोल में से 35 बोल ही मिलते हैं।	नारकी
(iv)	मेरे 84 अलावे होते हैं।	चौरेन्द्रिय
(v)	मेरी मध्यम अवगाहना में सास्वादन सम्यक्त्व हो सकती है।	बेइन्द्रिय
(vi)	मैं 100 से अधिक आकाश प्रदेशों पर नहीं ठहर सकता हूँ।	100 प्रदेशी स्कन्ध
(vii)	मेरे ग्यारह द्वार हैं।	अजीव पवज्जा
(viii)	मेरी स्थिति 22 हजार वर्ष है।	पृथ्वीकाय
(ix)	हाथी और चींटी में हम गिनती में एक समान होते हैं।	आत्म प्रदेश
(x)	अजीव पज्जवा में मेरे अलावे 35 हैं।	अवगाहना
(xi)	मैं एक समय में स्कन्ध बन सकता हूँ।	परमाणु
(xii)	मेरी पर्याय की स्थिति अनन्तकाल नहीं होती है।	पुद्गल
(xiii)	मैं अप्रदेशी होते हुए भी एक गुण काले वर्ण वाला हो सकता हूँ।	परमाणु
(xiv)	मैं कम से कम एक तथा अधिक से अधिक दो आकाश प्रदेशों पर स्थित रह सकता हूँ।	द्विप्रदेशी स्कन्ध
(xv)	चौफरसी अनन्त प्रदेशी स्कन्ध जब सम्पूर्ण लोक व्यापी होता है तब में कहलाता हूँ।	अचित्त महास्कन्ध

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए- 9x2=(18)

(i) अपर्याप्त जीवों से पर्याप्त जीव संख्यात गुणे कैसे हैं ?
क्योंकि सूक्ष्म जीवों में बाह्य व्याघात नहीं होने से उन जीवों की उत्पत्ति अधिक होती है तथा उनमें अपर्याप्त अवस्था में मरने वाले जीव थोड़े ही होते हैं।

(ii) 256 राशि के ढीगले के पहले 4 बोल लिखिए।
1. आयु के बंधकों की एक राशि, आयु के अबन्धकों की 255 राशि।
2. अपर्याप्त (लब्धि अपर्याप्त) की 2 राशि, पर्याप्त की 254 राशि।
3. सुप्त (सोते हुए) की 4 राशि, जागृत की 252 राशि।
4. समुद्घात करने वालों (सातों समुद्घातों में से किसी भी समुद्घात को करते हुए) की 8 राशि, समुद्घात नहीं करने वालों की 248 राशि।

(iii) परम्पर पर्याप्तक उद्देशक में किन जीवों का समावेश हुआ है ?
स्वयोग्य पर्याप्तियाँ बांधना प्रारम्भ करने के दूसरे समय से लेकर जीवन पर्यन्त तक के जीवों का समावेश इस उद्देशक में होता है।

(iv) मनःपर्याय ज्ञान में दूसरा भंग क्यों नहीं पाया जाता है ?
क्योंकि यदि ये वर्तमान में आयुष्य बांधते हैं तो वैमानिक का ही आयुष्य बांधते हैं और वैमानिक में उनको आगे भी आयुष्य का बंध करना ही पड़ेगा। वैमानिक से मुक्ति सम्भव नहीं है।

(v) एक पृथ्वीकाय की दूसरे पृथ्वीकाय से तुलना कीजिए।
द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, स्थिति की अपेक्षा त्रिस्थानपतित है, वर्णादि के बीस बोल की पर्यायों की अपेक्षा तथा तीन उपयोग (दो अज्ञान, एक दर्शन) की अपेक्षा षट्स्थानपतित है।

(vi) अवगाहना के आधार पर पुद्गलों की पर्याय कैसे बतलाई है ?
जघन्य अवगाहना, मध्यम अवगाहना तथा उत्कृष्ट अवगाहना की अपेक्षा से पर्याय बतलायी हैं।

(vii) जघन्य स्थिति वाले मनुष्य की जघन्य स्थिति वाले मनुष्य से तुलना कीजिए।
द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, स्थिति की अपेक्षा तुल्य है, बीस वर्णादि की पर्यायों तथा चार उपयोग (दो अज्ञान, दो दर्शन) की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है।

(viii) जघन्य चक्षुदर्शन वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय की जघन्य चक्षुदर्शन वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय से तुलना कीजिए।
द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है, बीस वर्णादि की पर्यायों की अपेक्षा तथा पाँच उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है, चक्षुदर्शन की पर्यायों की अपेक्षा तुल्य है।

(ix) उत्कृष्ट स्थिति वाले वैमानिक देव की उत्कृष्ट स्थिति वाले वैमानिक देव से तुलना कीजिए।
उत्कृष्ट स्थिति वाले वैमानिक देव, द्रव्य से तुल्य, प्रदेश से तुल्य, अवगाहना से चतुःस्थानपतित, स्थिति से तुल्य, वर्णादि के बीस बोल तथा 6 उपयोग (तीन ज्ञान, तीन दर्शन) की अपेक्षा षट्स्थानपतित कहना चाहिए।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 9x3=(27)

(i) कौन-कौनसे गुणस्थान अनाहारक होते हैं। कारण सहित लिखिए।
1,2,4,13,14 वाँ गुणस्थान अनाहारक होते हैं। 1,2,4 गुणस्थान बाटे बहते जीव की अपेक्षा, 13वाँ केवलि समुद्घात की अपेक्षा तथा 14वाँ अनाहारक ही होता है।

(ii) आयुष्य कर्म के बंधक से अबन्धक संख्यात गुणे कैसे होते हैं ?
क्योंकि आयुष्य कर्म जीवन में एक बार ही बन्धता है, वह भी वर्तमान भव के दो भाग बीतने पर तथा एक भाग शेष रहने पर अर्थात् तीसरे भाग में अथवा तीसरे भाग के तीसरे भाग, उसके भी तीसरे भाग आदि शेष रहने पर बन्धता है। आयु कर्म का बन्धकाल लगभग 1 आवलिका के आस-पास का संभव है। शेष काल अबंधकाल होने से संख्यात गुणा होता है।

(iii) साता वेदनीय के उदय से असाता के उदय वाले संख्यात गुणे कैसे होते हैं ?
क्योंकि सूक्ष्म और बादर साधारण कायिक जीवों में जन्म-मरण की अव्यक्त वेदना के साथ अनन्त जीवों के साथ एक ही शरीर में रहने से असाता ही अधिक होती है, फिर भी 16 राशि जितने अनन्त जीव साता वेदनीय के उदय से कुछ राहत अनुभव करते हैं।

(iv) सर्वार्थ सिद्ध के 26 बोलों में प्रथम भंग घटित क्यों नहीं होता है ?
सर्वार्थसिद्ध में जो आयुष्य का बंध कर रहा है वह अगले भव में निश्चित मोक्ष का अधिकारी है, वह आगे आयुष्य का बंध नहीं कर सकता है अतः पहला भांगा घटित नहीं होता है।

(v) 47 बोल की बंधी के चार भंगों को लिखिए।
1. कितनेक जीवों ने कर्मों को बांधा था, बांधता है और बांधेगा।
2. कितनेक जीवों ने कर्मों को बांधा था, बांधता है और नहीं बांधेगा।
3. कितनेक जीवों ने कर्मों को बांधा था, नहीं बांधता है और बांधेगा।
4. कितनेक जीवों ने कर्मों को बांधा था, नहीं बांधता है और नहीं बांधेगा।

(vi) वनस्पतिकाय के 27 बोलों में भांगों का कथन कीजिए।
तेजो लेशी पृथ्वी, पानी, वनस्पति में केवल तीसरा भांगा ही पाया जाता है।
कृष्ण पक्षी में पहला, तीसरा भांगा पाया जाता है।
शेष 25 बोल में चारों भांगे पाये जाते हैं।

(vii) वाणव्यन्तर के बोलों में भांगों का कथन कीजिए।
कृष्ण पक्षी में पहला, तीसरा भांगा पाया जाता है।
मिश्रदृष्टि में तीसरा, चौथा भांगा पाया जाता है।
शेष बोलों में सभी चारों भांगे पाये जाते हैं।

(viii) जघन्य अवगाहना वाले नारकी की जघन्य अवगाहना वाले नारकी से तुलना कीजिए।
द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा तुल्य है, स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थानपतित है तथा वर्णादि के बीस बोल तथा नौ उपयोग की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है।

(ix) एक द्विप्रदेशी स्कन्ध की दूसरे द्विप्रदेशी स्कन्ध से तुलना कीजिए।
द्रव्य की अपेक्षा तुल्य है, प्रदेश की अपेक्षा तुल्य है, अवगाहना की अपेक्षा कथंचित् हीन, कंथचित् तुल्य और कंथचित् अधिक होता है।
स्थिति की अपेक्षा चतुःस्थान पतित है और वर्णादि 16 बोलों की पर्यायों की अपेक्षा षट्स्थानपतित है।